# युवा जीवन

अप्रैल 2023

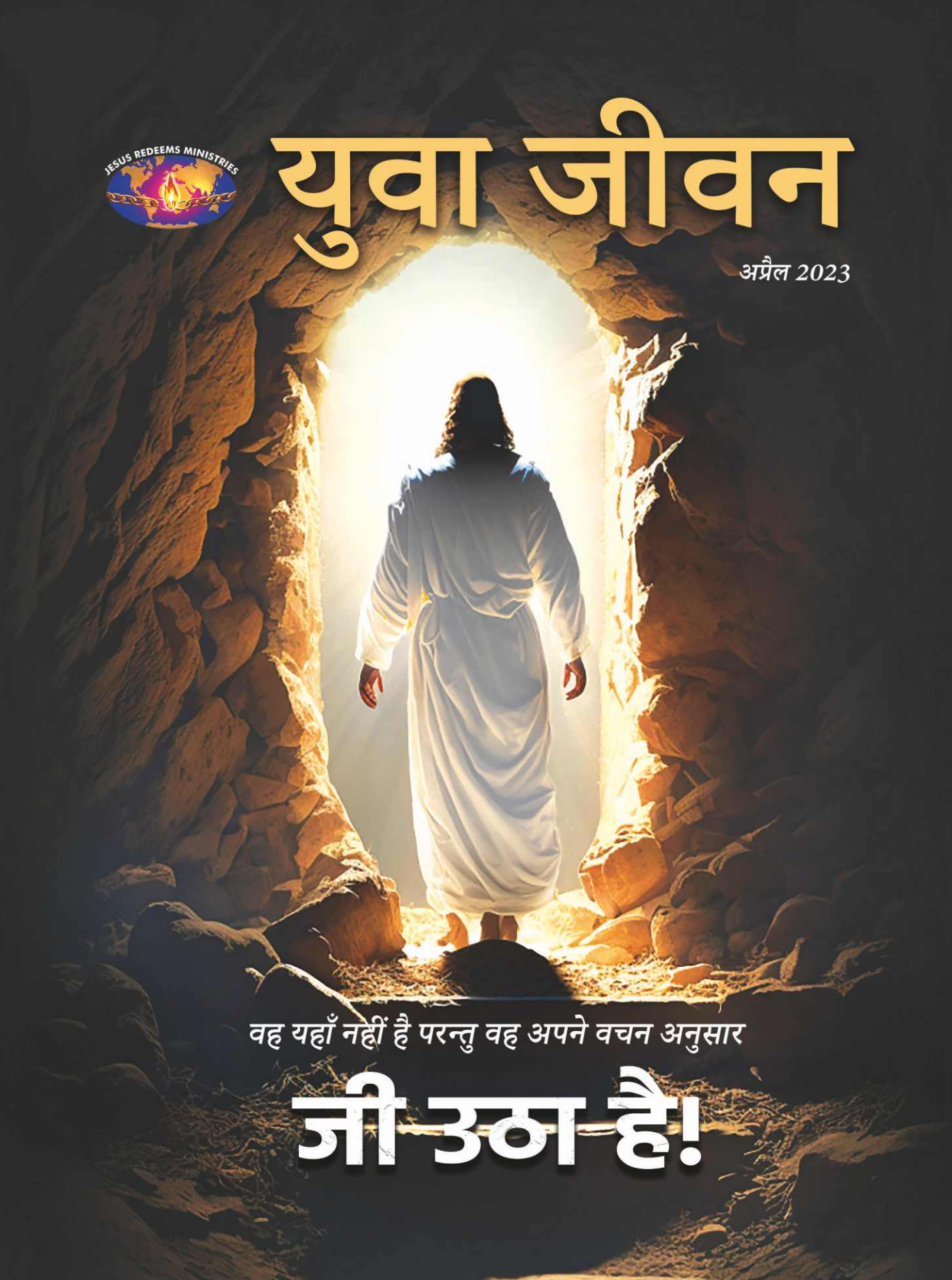

वह यहाँ नहीं है परन्तु वह अपने वचन अनुसार

## जी उठा है!

## प्रस्तावना

# मेरा उद्धारक जीवित है...!

*प्रिय युवा दिलों को कोमल बधाई!*

यीशु की कब्र, जो आज भी खुली है, कई लोगों के जीवन के लिए आशा की एक बड़ी कारण है। कई बार जब समस्याएँ और संघर्ष हमें घेर लेते हैं, तो हमें लगता है कि 'क्या यीशु ने मुझे छोड़ दिया है?' जब तिरस्कार और शर्म हमें सताती है, तो 'क्या यीशु हमें भूल गए हैं?' का विचार भी उठता है।

उसी तरह, मार्टिन लूथर किंग एक बार बहुत थके हुए थे और चुपचाप अपनी मेज के पास कुछ सोच रहे थे; उनकी पत्नी अचानक काले कपड़े पहने उसके सामने आ गई। चौंक कर, मार्टिन लूथर ने पूछा, "कौन मर गया? तुम काले कपड़े पहन कर आई हो।" उनकी पत्नी ने बड़े दुख के साथ कहा कि यीशु मसीह की मृत्यु हो गई है।

जब मार्टिन लूथर ने यह सुना, तो वह बहुत क्रोधित होकर बोला, "यह तुम क्या कह रही हो? यीशु जो पुनर्जीवित हो गए थे, वे आज भी जीवित हैं।" तब उसकी पत्नी ने कहा, 'यदि आप कहते हैं कि यीशु जीवित हैं, तो आप उदास क्यों हैं? यदि यीशु जीवित हैं, तो आप क्यों थके हुए हैं?' उसने पूछा।

मार्टिन लूथर के भीतर तुरंत विश्वास की एक बड़ी लहर उठी, और अश्रुपूर्ण आँखों से उसने ऊँची आवाज़ में कहा, 'यीशु जीवित ईश्वर है, जिसने कहा, 'मैं वह हूँ जो जीवित है, और मर गया था, और देखो मैं सर्वदा जीवित हूँ " ।(प्रकाशितवाक्य 1:18)' वह यीशु के नाम की स्तुति और स्तुति करने लगा।

मेरे प्यारे नौजवानों! बहुतों की बंद कब्रें और स्मारक केवल स्मरण के लिए हैं। लेकिन दुनिया में एकमात्र खुली कब्र हमारे यीशु की कब्र है! यह संपूर्ण मानव जाति के लिए आशा का एक स्रोत है। मैं इस दिन और आने वाले दिनों को आशा के साथ बिताता हूँ, क्योंकि वह जीवित है।

पुनरुत्थित यीशु न केवल हमें आशा देते हैं, बल्कि शाश्वत आनन्द, चिरस्थायी शांति, चिरस्थायी सुख और जीवन भी देते हैं। हमें अपने नाशवान युवा समाज के लिए उस महान परमेश्वर के सच्चे प्रेम की घोषणा करने के लिए फुर्ती करनी चाहिए और गहन रूप से सक्रिय होना चाहिए।

**एक जागृत योद्धा के रूप में यह आपका निरंतर कार्य है, दुनिया को पुनर्जीवित यीशु को दिखाना!**

**पुनर्जीवित यीशु आपको ढूंढ रहा है!**

**यह आपका कर्तव्य है कि आप पूरी दुनिया में यह घोषणा करें कि 'वह जी उठे,जैसा उन्होंने कहा था'!**

**यह आपकी महान जिम्मेदारियां हैं!**

समझें!

घोषणा करें!

*मसीह के मिशन में,*
*अविनाश*

# वचन की जागृति!

परमेश्वर के वचनों से युक्त पवित्र बाइबल वह पुस्तक है, जिसका अनुवाद दुनिया की लगभग 3350 भाषाओं में किया गया है। कोई भी इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकता है कि, परमेश्वर के वचन के माध्यम से, समय के हर चरण में जागृति होती है। परमेश्वर जागृति का प्रेषक है। जागृति के दौरान लोग बड़ी संख्या में मसीह की ओर मुड़े। यहां तक कि प्रार्थनाएं जो वर्षों से अनुत्तरित हैं, उन्हें जागृति के समय में शानदार ढंग से उत्तर दिया जाएगा। परमेश्वर वचन के माध्यम से ऐसे लोग को बदलता है जो उस से भटक गए हैं।

नबूकदनेस्सर के दिनों में, यहूदा और यरूशलेम के लोगों को बन्दी बनाकर बाबुल ले जाया गया। 70 वर्षों के बाद, यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू को प्रेरित किया कि वह बाबुल से पुरुषों को भेजकर यरूशलेम के नष्ट हुए मंदिर का पुनर्निर्माण करे। जब एज्रा नाम का एक शास्त्री जो उनके साथ चला गया था, यहोवा के साम्हने खड़ा होकर यह प्रार्थना किया, "...इस्राएल से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की एक बहुत बड़ी सभा उसके पास इकट्ठी हुई; (एज्रा 10:1)। तब शकन्याह, जो यहीएल का पुत्र था, एला के पुत्रों में से एक ने एज्रा से कहा, 'हम लोगों ने इस जगह की परदेशी स्त्रियों के संग अपने परमेश्वर का विश्वासघात किया है', और लोगों ने अपने पापों को स्वीकार किया और परमेश्वर की ओर मुड़े। इस प्रकार, यहोवा ने अपने लोगों को, जो पापें गिरे हुए थे, एज्रा नामक एक परमेश्वर के व्यक्ति के साथ अपनी तरफ कर लिया।

यीशु की सेवकाई के दिनों में, जहाँ कहीं वह भीड़ से मिला, "उसने उन्हें वचन सुनाया" (मरकुस 2:2)। संदेश सुनने वालों में से बहुतों ने पश्चाताप किया और यीशु के पीछे हो लिए। पवित्र शास्त्र कितना सच है, "तेरी बातों ने ठोकर खानेवाले को सम्भाला, और निर्बल घुटनों को तू ने दृढ़ किया" (अय्यूब 4:4)।प्रभु का वचन बहुतों के लिए पश्चाताप लाता है जो पाप में गिर गए हैं। यीशु के बाद, पहले प्रेरित ने जोश के साथ प्रभु के वचन का प्रचार किया। जबकि पतरस प्रथम शिष्य ने प्रचार किया, लगभग 3000 लोगों के हृदय छिद गए, उन्होंने पश्चाताप किया और बचाए गए। बाद में यह बढ़कर 5000 हो गया। इस प्रकार वचन बढ़ा और यरूशलेम के आसपास के शहरों में फैल गया। वचन सुनने वालों की भीड़ प्रभु की ओर फिर गई।

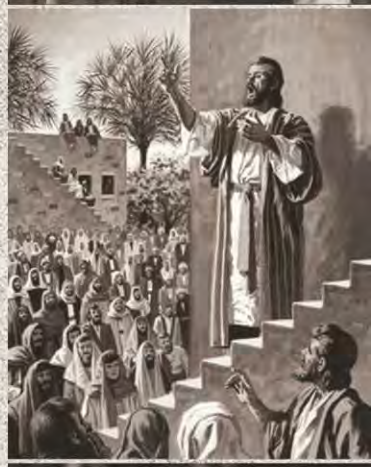

डॉ. बिली ग्राहम ने अमेरिका की जागृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि उनकी सभाओं में कई चमत्कार और भविष्यवाणियाँ नहीं हुईं, उन्होंने अपने सभी उपदेशों में परमेश्वर के वचन पर जोर देते हुए कहा, "वचन इस प्रकार कहता है।" जहाँ कहीं वह गया वहाँ परमेश्वर के वचन की एक महान जागृति हुई और बहुत से लोग बचाए गए।

मेरे प्यारे युवाओं! क्या तुमने देखा कि जीवित परमेश्वर के वचन कितने शक्तिशाली हैं? यदि आप उठकर उन युवाओं के बीच प्रभु के वचन का प्रचार करना शुरू करते हैं जो जोश भरे गीतों और संगीत से मंत्रमुग्ध हैं, तो ये शब्द बहुतों के लिए पश्चाताप लाएंगे, जो पाप में गिर गए हैं और थके हुए हैं।

जहाँ कहीं भी तुम प्रभु के वचन का प्रचार करोगे, वहाँ महान जागृति होगी। बिना देर किए, आज ही अपने आसपास के लोगों

बहन मेरी पुष्पम।

# प्यार के लिए तरस गया!

**एक मसीही परिवार में जन्मी, वह बहन जिसने बचपन में कई छोटे बच्चों को वीबीएस के माध्यम से प्रभु में बदल दिया, खुद प्यार के लिए तरसती थी और अपनी किशोरावस्था में अपने लिए दोस्तों का एक मंडली बना ली, और जब वह यीशु से पीछे हट गई, तो प्रभु ने खुद उसकी खोज की और अपने अथाह प्रेम को प्रकट किया। आइए उसकी बात सुनें!**

## अपने परिवार और बचपन के बारे में बताएं?...

मेरा जन्म तिरुनेलवेली जिले के राजदूतम में श्री जयापॉल और श्रीमती मरियाल की दूसरी बेटी के रूप में हुआ था। मेरा एक बड़ा भाई है जिसका नाम नेल्सन अमलराज है और एक छोटा भाई है जिसका नाम धासन है।

मैंने आईटीआई (इलेक्ट्रिकल) पूरी कर ली है। वर्तमान में मैं हार्वेस्ट इवेंजिलिकल ट्रेनिंग कॉलेज (एचईटीसी) में पढ़ रही हूं। मैंने बचपन से ही अपने माता-पिता की बात नहीं मानी। मुझे टीवी सिनेमा जैसी बहुत सी साधारण चीजों की लत लग गई थी। मैं अक्सर अपनी मां से लड़ती और बहुत विद्रोह करती थी।

## ठीक है... तो आपने यीशु को कैसे स्वीकार किया?

मैं 13 साल की उम्र में उद्धार पाई जब मैं 8 कक्षा में थी। लेकिन यीशु ने मुझे तब चुना जब मैं 7 साल की अपनी दूसरी कक्षा में थी। उस उम्र में जब मुझे यह भी नहीं पता था कि वीबीएस क्या होता है, मैं पड़ोस के बच्चों को अपने घर ले जाती थी और फिर उन वचनों को सिखाती थी जिनके बारे में मुझे चर्च में सिखाया गया था और उन्हें वह खाना बांटती थी जो मां हमारे लिए पकाती थी।

जैसे-जैसे दिन बीतता गया, मुझे इसे उसी तरह करने का विचार आया जिस तरह चर्च VBS आयोजित करता है। मेरे दिल में चर्चों की तरह VBS के लिए नोटिस के पोस्टर लगाने की इच्छा थी। लेकिन उन दिनों हमारे पास कुछ पोस्टर छापने के पैसे नहीं होते थे इसलिए हम

A4 शीट पर लिख देते थे कि "हम अपने घर में VBS से संपर्क करते हैं" और इसे खुद ही सभी दीवारों पर चिपका देते थे, इस प्रकार मुझे बचपन से ही सेवकाई करने की ललक थी।

## बहुत बढ़िया... आपको बहुत कम उम्र में ही सेवा की प्रेरणा मिली... क्या आपने इसे करना जारी रखा?

एक ओर सेवकाई बढ़ने लगी तो दूसरी ओर सांसारिक प्रेम और सांसारिक वस्तुएँ बढ़ने लगीं। जब मैं 8वीं कक्षा में थी, यीशु ने एक गलती बताई जो मैंने की थी।

मैं पूरे दिल से बदलना चाहती थी लेकिन मैं नहीं कर सकी। कारण था सांसारिक मित्रों का प्रेम। एक समय था जब मैं अपने दोस्तों के बिना अधिक समय तक नहीं रह सकती थी। लेकिन फिर भी मैंने अपनी रविवार की प्रार्थना, गृह प्रार्थना और VBS सेवकाई को जारी रखा।

लेकिन मैंने अपने पाप से बाहर आने का कोई प्रयास नहीं किया। मैं जो सोचती थी, "दोस्तों के बिना जीवन नहीं है", उनकी वजह से कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस दुनिया में कोई भी अपने दोस्तों के लिए इतना पैसा खर्च नहीं कर सकता था जितना कि मैंने किया।

अगर मेरे दोस्त मुझसे बात नहीं करते तो मैं अपना हाथ काट लेती थी। मैं माँ-बाप की तरह सब को नफरत दिखाती जैसे बिना खाये रह कर। मैं यह समझ कर की 'दोस्त ही मेरी दुनिया है' जिंदगी जी रही थी। मैंने कभी ऐसा कुछ नहीं किया जो मुझे पसंद हो। पर मैं अपने दोस्तों के लिए कुछ भी करती। लेकिन मेरे दिल में न तो शांति थी और न ही खुशी।

**यह सुनकर वास्तव में दुख हुआ .. अच्छा दोस्तों ने आपको खुश नहीं किया ... क्या आप फिर से दोस्तों से प्यार की तलाश में गईं?**

जब मैं 12 वीं कक्षा में पढ़ रही थी तो एक शिक्षक मेरे प्रति बहुत दयालु और प्यार करने वाले थी। मैं भी उनसे बहुत प्यार करती थी। मैं अपने परिवार से नफरत करने लगी थी और मैं शिक्षक को अपनी माँ की तरह मानती थी। पर वह प्रेम भी केवल आंसू और दुख ही लाया। बाद में आई टी आई में मुझे एक नयी दोस्त मिली, और मैंने अपनी सारी कहानियाँ उससे साझा की। उसकी शादी को 6 साल हो गए थे और वह निःसंतान थी, मैंने उसे अपना सारा प्यार यह सोचकर दिखाया कि उसे मेरा प्यार पूरी तरह से मिलना चाहिए क्योंकि उसकी कोई संतान नहीं है। यदि वह एक दिन कक्षा में नहीं आती तो मैं रोती रहती थी। मैं उसके परिवार की हर चीज में मदद करती।

मैंने उसके लिए बहुत प्रार्थना की। ऐसे में मैंने एक कंपनी में जुड़ी और वहां 5 महीने काम करने के बाद 20,000 रुपए सैलरी मिली। मैंने अपने माता-पिता को केवल 4000 रुपये दिए और बाकी के 16,000 रुपये अपने दोस्तों पर खर्च कर दिए। मैं यीशु और उद्धार के बारे में पूरी तरह से भूल गयी। लेकिन मैं दायित्व के कारण सेवा भी कर रही थी।

**ठीक है... आपने अपने दोस्तों के कारण खुशी खो दी... आप यीशु को भूल गए और दायित्व से सेवकाई की... आपने किस तरह की सेवकाई की?**

यद्यपि मैं संसार के प्रेम में आसक्त थी, परन्तु प्रभु ने मुझे याद किया और कई स्थानों पर सुसमाचार प्रचार करने में मेरी सहायता की। एक मसीही संगठन के माध्यम से यीशु ने मुझे एक वर्ष के भीतर 14000 बच्चों का दौरा करने और प्रचार करने और सुसमाचार फैलाने के लिए अनुग्रहित किया। हालांकि मैं यीशु से दूर चली गई, लेकिन वह मुझे अपनी सेवा में भेजते रहे।

मैं परमेश्वर से यह कह कर प्रार्थना करती कि 'मैं 10 महीने के लिए एक समय का भोजन छोड़ कर अपने मित्र के लिए उपवास और प्रार्थना करूँगी, उसे बच्चे की आशीष दो"।

बहन मैरी अपने परिवार के साथ।

इसी तरह 10 महीने के बाद, उसने मुझे बताया कि वह गर्भवती है। यीशु ने मेरी प्रार्थना सुनी और उसे 2020 में एक बेटी और 2021 में एक बेटा दिया। छह साल की समस्या हल हो गई।

अप्रत्याशित रूप से एक दिन मेरे दोस्त ने सब कुछ मेरे चेहरे पर फेंक दिया जो मैंने उसके लिए खरीदा था, सबके सामने मुझे अपमानित किया और एक झूठा आरोप लगाते हुए मुझे घर से बाहर भेज दिया, जब मैंने एक गलत काम करने के लिए उसे फटकार लगाई। तभी मुझे अकेलापन महसूस होने लगा। मैं बहुत ही निराश और उदास थी।

जब मैं मायूस होकर अकेली बैठी थी, यीशु मुझे ढूंढ़ते हुए आए और कहा, "बेटी, मैंने जो बुलाहट तुम्हें दी है वह अलग है, तुम क्यों रो रही हो?" यीशु की आवाज़ न सुनते हुए मैंने कहा, "मैं सेवकाई करना नहीं चाहती, मेरे लिए नौकरी पाने के द्वार खोलो।" यीशु ने कहा, "मेरी सेवा करो।" हालाँकि, मैंने उससे आग्रह किया और प्रार्थना की कि मुझे नौकरी चाहिए, तो परमेश्वर ने मुझे एक निजी कंपनी में नौकरी दे दी।

चूँकि मैंने उस स्थान पर यीशु के बारे में बताकर कई लोगों को मसीह के पास पहुँचाया, इसलिए प्रबंधन ने मुझे कड़ी फटकार लगाई और चेतावनी दी कि "यदि तुम फिर से ऐसा करती हो, तो तुम्हें निकाल दिया जाएगा।" लेकिन जहाँ मेरा अपमान किया गया था, वहाँ यीशु ने मुझे सिर ऊँचा रखा। परमेश्वर ने मुझे इस हद तक बड़ा किया है कि उसी कंपनी में मेरी फोटो वाला बैनर लगा दिया जिस पर कहा था "सबसे अच्छा वाइन्डर और कार्यकर्ता"।

### बहुत बढ़िया...! उसने आपको आपके कार्यस्थल पर ऊंचा किया... क्या आप उसी कंपनी में काम कर रही हैं? आप अभी क्या कर रही हैं?

यीशु ने मुझे एहसास कराया कि सांसारिक प्रेम व्यर्थ है, सांसारिक चीजें, काम, पैसा और शिक्षा सब व्यर्थ हैं।

अब मैंने सब कुछ पीछे छोड़ दिया है और उसके लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ हार्वेस्ट इवेंजिलिकल ट्रेनिंग कॉलेज में अध्ययन कर रही हूं।

### आप युवाओं को क्या कहना चाहेंगी?

इस संसार में हम दूसरों पर जो प्रेम बरसाते हैं वह व्यर्थ है! एक दिन वह प्यार हमें चोट पहुँचाएगा। लेकिन यीशु बिना पाने की अपेक्षा के अपना प्रेम दिखाने के लिए हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। केवल वही सच्चा, निस्वार्थ प्रेम दिखा सकता है। हमारी पहली प्राथमिकता हमेशा यीशु के लिए होनी चाहिए।

सबसे पहले, हमें यह पूछने और जानने की आवश्यकता है कि उसका उद्देश्य, इच्छा और हमारे लिए बुलाहट क्या है। हम ही हैं जो हमेशा उससे बात कर रहे हैं।

यीशु को बोलने दें। उसकी इच्छा जाने। उसकी आवाज सुनें, कि उस की इच्छा पूरी करें। तभी हम पूरी तरह से ईश्वर का प्रेम प्राप्त कर सकते हैं।

***प्रिय युवा लोगों! बहन मैरी पुष्पम ने सोचा कि 'दोस्त ही उसकी जिंदगी हैं' और भले ही उसने अपना सब कुछ अपने दोस्तों को दे दिया, लेकिन उसे सच्चा प्यार नहीं मिला। अकेलेपन के समय में, प्रभु ने उनसे सीधे मुलाकात की, अपने कलवरी प्रेम को व्यक्त किया और आज बहुतों के लिए साक्षी के रूप में उनका उपयोग कर रहे हैं। उसी तरह, परमेश्वर भी आपका उपयोग कर सकता है। इसके लिए जरूरी है कि आप प्रभु की आवाज सुनें और केवल उसकी इच्छा पूरी करने के लिए खुद को समर्पित करें!***

# पुनर्जीवित यीशु की शक्ति !

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! हर महीने हम अलग-अलग विषयों पर बहुत सी बातों का ध्यान कर रहे हैं। इस महीने आइए हम इस लेख में यीशु के पुनरुत्थान के बारे में पढ़ें। हाँ, दुनिया भर के मसीहों के लिए यीशु मसीह के पुनरुत्थान को 'ईस्टर' रविवार के नाम से मनाने की प्रथा है। आइए हम विश्लेषण करें कि प्रभु यीशु मसीह का पुनरुत्थान कितना महत्वपूर्ण है, और इस दुनिया में यीशु के गवाहों के रूप में जीने के लिए विश्वासियों के रूप में उस पुनरुत्थान की शक्ति कितनी महत्वपूर्ण है।

यीशु मसीह ने अपने सूली पर चढ़ने और तीसरे दिन मृत्यु से पुनरुत्थान के बारे में बहुत स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। तदनुसार, उनके पीछे चलने वाले कुछ शिष्य रविवार की सुबह उनके शरीर की तलाश में गए। दो पुरुषों ने बिजली की तरह चमकीले कपड़े पहने हुए स्त्रियों की ओर देखा और पूछा, "तुम जीवित को मृतकों में क्यों ढूंढती हो? "(लूका 24:5)। हाँ दोस्तों यीशु जी उठा है! उसकी कब्र आज तक खाली है। यीशु के पुनरुत्थान ने न केवल इस सत्य को प्रमाणित किया कि वह परमेश्वर का पुत्र था, बल्कि उसके उन शिष्यों को भी अनंत आशा दी जिन्होंने विश्वास खो दिया था कि सब कुछ समाप्त हो गया है। हाँ, यदि यह यीशु के पुनरुत्थान के लिए नहीं होता, तो हमारा विश्वास व्यर्थ होता और हम अभी भी पाप में होते, 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 में प्रेरित पौलुस कहता है |

हाँ, मेरे प्यारे दोस्तों, कभी-कभी हम उस स्त्रियों की तरह मरे हुओं में से उठे हुए मसीह को खोजते हैं। आज भी वह प्रभु के दाहिने हाथ विराजमान है और हमारे लिए विनती करता है। "... और निश्चय ही, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:20) न्यायोचित ठहराता है कि वह आज भी हमारे बीच में रहता है। (इफिसियों 1:19) में पौलुस प्रार्थना करता है कि हमें परमेश्वर की अत्यधिक महानता को समझना चाहिए। उसकी सामर्थ हम पर जो विश्वास करते हैं, उस पराक्रमी सामर्थ्य के कार्य के अनुसार जो उस ने मसीह में उस समय किया जब उस ने उसे मरे हुओं में से जिलाया।

उनके पुनरुत्थान की शक्ति हमारे लिए इस दुनिया में 'यीशु जैसा आदर्श जीवन' जीने के लिए आवश्यक है। जिन स्कूलों और कॉलेजों में आप पढ़ते हैं, कार्यस्थलों में, जब ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जो हममें वासनापूर्ण प्रलोभनों, पापमय विचारों और कर्मों को भड़काती हैं, तो उन परिस्थितियों पर विजय पाने के लिए उनके पुनरुत्थान की शक्ति हमारे लिए आवश्यक है

बाइबल कहती है कि यह शक्ति प्रत्येक विश्वास करने वाले के लिए आरक्षित है। (रोमियों 8:11) कहता है, "परन्तु यदि उसका आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है, तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।"

**मेरे प्यारे भाइयों और बहनों! परमेश्वर की आत्मा जिसने यीशु को जिलाया वह हमारे भीतर वास करता है। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप पवित्र आत्मा की शक्ति से और अधिक भर जाएं और आप अपने दैनिक जीवन में पवित्र आत्मा की पुनरुत्थान शक्ति का उपयोग करें और विजयी मसीही युवा बनें!**

प्रिय बहन स्नेहा, यह देश के युवाओं के बीच हर जगह प्रासंगिक समस्या है। मैं दर्द को महसूस कर सकता हूं, हालांकि यह जानना कि आप क्या कर रहे हैं, गलत है, 'इसे जाने नहीं दे पाने' का पछतावा और इस समस्या के बाद के प्रभाव। रात में वीडियो और सीरीज देखने से होने वाली परेशानी और काम में असफलता ने आपके दिमाग पर काफी असर डाला है.

कई बार यह आपको डराता है कि आप अपनी नौकरी खो सकते हैं। आपके लिए उन कहानियों रात में देखते हैं के बारे में अपने दोस्तों के साथ बात करना दिलचस्प हो सकता है लेकिन उसके लिए आपको जो कीमत चुकानी पड़ती है वह बहुत अधिक होती है। यह आपकी आंखों और कुल मिलाकर आपकी सेहत को प्रभावित कर सकता है और अंततः उस बिंदु तक एक समस्या बन सकता है जहां आप काम नहीं कर सकते। आप महसूस कर रहे हैं कि कैसे यह आपके जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रहा है लेकिन इससे छुटकारा नहीं पा रहे क्योंकि आप इसके आदी हैं।

स्नेहा! आप एक ओर मोबाइल फोन के आदी होने के विचार से दुखी हैं और दूसरी ओर व्यसन के कारण वास्तविक जीवन की समस्याओं का सामना करते हैं। लेकिन प्रिय स्नेहा, आप इस लत पर तभी काबू पा सकते हैं जब आप वास्तव में चाहते हैं।

यह आदत कोई मज़ाक की बात नहीं है। क्योंकि इससे पहले कि आप समस्या की तीव्रता को महसूस करते, यह पहले से ही आपके नियंत्रण से बाहर थी। अगर आप इस आदत को छोड़ दें तो आप आसानी से इससे बाहर आ सकते हैं। यदि नहीं, तो यह एक विस्तृत पाताल जैसा जाल है, और इसमें गिरने वालों के लिए बाहर निकलना बहुत कठिन है। इसलिए, इस से बाहर आने के लिए बहुत अधिक समर्थन और सावधानीपूर्वक प्रयास करने की आवश्यकता है।

## इस लत से बाहर आने के कुछ उपाय:

- अपने मोबाइल पर 'WELL BEING' विकल्प का प्रयोग करें। यह आपको बताएगा कि आप अपने मोबाइल पर कितने घंटे बिताते हैं और यह आपको एक निश्चित समय के बाद किसी भी ऐप का उपयोग करने से प्रतिबंधित कर देगा।
- रात 9:30 बजे के बाद अपने मोबाइल का उपयोग करने से बचें।
- डेटा को अनावश्यक रूप से रिचार्ज न करें।
- उन ऐप्स को हटा दें जो आपको अलग-अलग वीडियो और सीरीज देखने के लिए लुभाते हैं। (नेटफ्लिक्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम)
- नेटफ्लिक्स और अमेज़ॅन प्राइम जैसे ऐप्स की सदस्यता लेना बंद करें।
- अपनी मित्र मंडली बदलें। अगर उनके पास श्रृंखला देखने और हर समय उनके बारे में बात करने की संस्कृति है तो यह आपको उनमें से और अधिक देखने के लिए भी लुभाएगा।
- सुबह जल्दी उठने की आदत डालें।
- सुबह व्यायाम, साइकिल चलाना या जॉगिंग जैसी कोई शारीरिक गतिविधि करें। इससे आपको जल्दी सोने में मदद मिलेगी।
- अच्छी मात्रा में नींद लेने की कोशिश करें। यह आपको पूरे दिन तरोताजा रखेगा और आपकी उत्पादकता बढ़ाएगा और आपको काम में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करेगा।

ऊपर बताए गए इन सुझावों का पालन करने के लिए आपको बहुत प्रयास करने होंगे। लेकिन कई बार जिन कामों को हम अपनी ताकत से करने की कोशिश करते हैं उनके असफल होने की संभावना रहती है। इसलिए इन सब बातों से ऊपर, जब आप परमेश्वर से मदद मांगते हैं, उस पर निर्भर रहते हैं और पवित्र आत्मा की मदद से प्रार्थना करते हैं, तो आप इस पर काबू पाने और पूर्ण छुटकारा पाने में सक्षम होंगी।

प्रिय बहन स्नेहा! जब आप अपने पूरे दिल से मांगते हैं, "प्रिय यीशु, मुझे इस मोबाइल की लत से मुक्ति दिलाएं। मुझे विश्वास है कि केवल आप ही मुझे मुक्त कर सकते हैं। मुझे अपना समय बर्बाद करने और बुरी गवाही का जीवन जीने के लिए क्षमा करें", आप वास्तव में उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। आप भी प्रलोभन पर काबू पा सकते हैं और शीर्ष पर पहुंच सकते हैं!

**"इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:36)**

# वे पुनर्जीवित हो गये हैं!

गुओ गैंगटंग, जो चीन के निवासी हैं, ने अपने बेटे की तलाश शुरू कर दी, जब किसी ने दरवाजे पर खेलते समय उसका अपहरण कर लिया। 20 से अधिक वर्षों के बाद भी, उन्होंने अपनी खोज बंद नहीं की। जब से उन्होंने अपने बच्चे की तलाश शुरू की, उन्होंने 10

मोटरसाइकिलें बदलीं और 5 लाख किलोमीटर की यात्रा की। इतने प्रयास, पीड़ा और दृढ़ विश्वास के साथ अपने बच्चे की तलाश में भटकने के बाद, 2021 में उनका प्रयास सफल हुआ। हां, उन्हें 24 साल बाद उनका बेटा मिला, जो 1997 में लापता हो गया था।

जब आप यूट्यूब पर गैंगटैंग और उसकी पत्नी को 24 साल बाद अपने बेटे को देखकर और उसे गले लगाकर रोते हुए देखेंगे, तो एक पिता के प्यार की गहराई को महसूस किया जा सकता है। गुओ गैंगटैंग अपने बच्चे की तलाश में भटकते रहे, यीशु इस धरती पर मनुष्य के पुत्र के रूप में आए, क्योंकि मनुष्य जो उनकी छवि में बनाया गया था, उसने पाप किया था और उसे छोड़ दिया था। "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उसका उद्धार करने आया है" (लूका 19:10)।

कोई भी मनुष्य इतनी आसानी से मृत्यु को नहीं चाहता, न ही उसका सामना करने का साहस करता है। जैसा कि "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोमियों 6:23), इस दुनिया में ऐसे असंख्य कैदी हैं जो मृत्यु के भय में रहते हैं और हर दिन इसका अनुमान लगाते हैं। उन्हें अपने पापी कृत्य के अनुरूप दंड भुगतना चाहिए। कोई इससे बच नहीं सकता। बरअब्बा नाम का एक बन्धु अपने किए हुए बलवे और हत्या के कारण मृत्यु की बाट जोह रहा था। उसे छुड़ाने वाला कोई न था। उसके दिन गिने चुने थे। वह हर दिन मौत के डर से जूझ रहा था और सोच रहा था, 'मुझे कौन आज़ाद करेगा? जब वह मृत्यु के रास्ते में

था, बाहर एक आवाज सुनाई दी: "यीशु को सूली पर चढ़ाओ और हमारे लिए बरअब्बा को रिहा करो"।

बरअब्बा, जिसे क्रूस पर मरने के लिए नियत किया गया था, यीशु द्वारा मुक्त किया गया था। यीशु ने उसके स्थान पर क्रूस पर मृत्यु को स्वीकार किया। बरअब्बा, जो मृत्यु का कैदी था, धर्मी ठहराया गया। यीशु ने न केवल एक व्यक्ति, बरअब्बा के क्रूस पर दिए गए दण्ड को स्वीकार किया। वह इस पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के पाप के दंड को स्वीकार करते हुए, क्रूस पर मर गया।

यीशु, जिसने मृत्यु का सामना किया, ने अपनी मृत्यु के द्वारा शैतान को जो मृत्यु का स्वामी है को पराजित किया और तीसरे दिन फिर से जी उठा।

पुनर्जीवित प्रभु आज भी जीवित हैं।जिसने कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ" वही मुक्तिदाता है जो पाप के लिए मरे हुए मनुष्य को छुड़ाता है। "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं का उद्धार करने आया है।" (मत्ती 18:11)।

आम आदमी के शब्दों में, वह मनुष्यों के बीच एक जीवित परमेश्वर के रूप में वास कर रहा है, एक ऐसे परमेश्वर के रूप में जो शैतान द्वारा भ्रष्ट किए गए प्रत्येक मनुष्य के जीवन को ठीक करता है।

यदि आप भी प्रतिदिन पाप में मर रहे हैं, असफलता का भय, भविष्य की चिंता, और मृत्यु का भय, तो चिंता न करें! जो मृत्यु पर विजय पा लेता है वह जीवित रहता है। वह तुम्हें पुनर्जीवित करेगा जो पाप के लिए मर चुके हैं।

सप्ताह के पहले दिन भोर को मरियम, जो यीशु की खोज में कब्र पर गई थी, खुली कब्र को देखकर चौंक गई। उसने

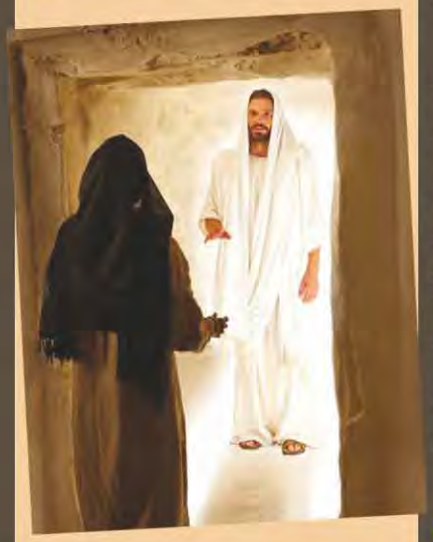

तुरंत यह समाचार सभी शिष्यों को बताया। जिन्होंने यह सुना वे यीशु की कब्र में गए और लौट आए, परन्तु वे यीशु के लापता शरीर के बारे में चिंतित नहीं थे। पर मरियम कब्र के पास बड़ी लालसा से खड़ी थी, कि उस ने यीशु की लोथ को न देखा। जितने चेले यीशु के साथ सेवा करते थे, वे सब उसके पास से छोड़ कर चले गए। लेकिन मरियम ने नहीं गई। जब वह यीशु के शरीर को देखने के लिए तरस रही थी, तो पुनर्जीवित यीशु पहले उसके सामने प्रकट हुए।

उसने पापी के रूप में उसका तिरस्कार नहीं किया। "मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया..." (तिमु. 1:15)। वह मरियम के सामने प्रकट हुआ क्योंकि वह वास्तव में उससे प्यार करती थी। पुनर्जीवित यीशु आज भी जीवित है।

वह उन सभी को दिखाई देगा जो ईमानदारी से उसकी खोज करते हैं। यीशु हमारे लिए मरा, यह जानते हुए कि हमें बचाने का एकमात्र तरीका अपनी जान देना है। लेकिन अगर वह कब्र में होता, तो हमें उद्धार नहीं मिलता। यह उनके पुनरुत्थान के कारण है, कि 'हम' जो पाप के लिए मर चुके थे, उन्हें छुड़ाया गया है।

***मेरे प्रिय जवानों! कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस प्रकार की पापी स्थिति में हैं, "यदि आप अपने मुँह से यीशु को प्रभु मानते हैं और अपने हृदय में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया है, तो आप उद्धार पाएंगे" (रोमियों 10:9)। जिस दिन कब्र खोली गई और अंधेरा चला गया वह यीशु के पुनरुत्थान का दिन था।***

# क्रूसित यीशु!

***जहां भी मसीही मौजूद हैं हम सब वहां एक क्रुस देख सकते हैं। जब एक चर्च बनाया जाता है, तो छत पर एक क्रुस लगाया जाता है। कई चर्चों की वेदी पर एक क्रुस होता है। कुछ क्रुस पेंडेंट के साथ चेन पहनते हैं। इस प्रकार, हम कई तरह से क्रुस का उपयोग करते हैं। लकड़ी, सोने और चांदी से बने कई प्रकार के क्रुस होते हैं।***

***पाम संडे के दिन भी हम ताड़ के पत्तों में क्रुस बनाते हैं और उन्हें अपने घरों में लटकाते हैं। हम हर जगह क्रुस देखते हैं। यह क्रुस सिर्फ पहचान का प्रतीक है और यह पूजा के योग्य नहीं है। यीशु जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया और लहूलुहान कर दिया गया वह सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए हम यीशु के बारे में साझा करना चाहते हैं जिसे हर किसी के लिए, क्रूस पर चढ़ाया गया था।***

## क्रूस हमें क्या प्रकट करता है?

क्रूस हमें प्रकट करता है कि पाप कितना भयंकर है। यह पाप की शक्ति और भयानकता को प्रकट करता है। इसलिए, जहाँ कहीं भी हम क्रूस को देखते हैं, हमें यह महसूस करना चाहिए कि हमारा पाप कितना भयानक है। यही कारण है कि चर्चों और घरों में क्रुस को प्रतीक के रूप में प्रयोग किया जाता है। सूली पर चढ़ाना रोमन सरकार द्वारा हत्या और डकैती करने वालों, सरकार के खिलाफ विद्रोह करने वालों और खुलेआम अपराध करने वालों को दी जाने वाली मृत्युदंड की सजा थी।

अगर सरकार ने किसी आदमी को सूली पर चढ़ाने का फैसला करता, तो वे उसे बेरहमी से पीटते, उसके कपड़े उतार देते, और उसे सूली पर लटका कर छोड़ देते।

थोड़ा-थोड़ा खून बहेगा , वह तड़पेगा, घातक पीड़ा झेलेगा और अपने जीवन से घृणा करते हुए मर जाएगा। क्रुस पर चढ़ाया जाना एक ऐसी स्पष्ट मृत्यु है।

तो जिस परमेश्वर ने स्वर्ग, पृथ्वी और हमें बनाया, वह उस क्रूस पर क्यों लटकाया गया ? उसने क्या अपराध किया? उसने क्या पाप किया? सरकार ने उसे दंड क्यों दिया? बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि, उसने न तो पाप किया और न ही कोई अपराध किया। वह अपने पापों के कारण नहीं परन्तु हमारे पापों, हमारे अधर्म के कामों और हमारे अपराधों के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया।

मेरे प्यारे नौजवानों! उसने अपने आप को आपके और मेरे पाप के लिए क्रूस पर लटकने के लिए दे दिया। उसके खिलाफ कोई अपराध नहीं पाया गया। कोई नहीं कह सकता था कि वह दोषी है। लेकिन वह एक दोषी की तरह सूली पर लटका दिया गया।

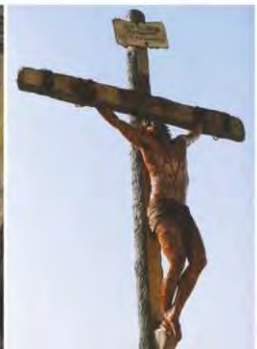

हमारे अधर्म और हमारे पाप यीशु को क्रूस पर ले गए। क्रूस ने हमें दिखाया कि पाप कितना भयानक है। यह हमारा पाप और अपराध है जो पवित्र, निष्पाप परमेश्वर को क्रूस तक ले गया। जब भी हम क्रूस को देखते हैं, हम महसूस कर सकते हैं कि हमारे पाप कितने भयानक हैं। पवित्र परमेश्वर को लुटेरों के बीच डाकू की तरह लटका दिया गया। जब हम उससे हमें शुद्ध करने के लिए कहते हैं, तो उसका लहू हमारे पापों को साफ करेगा और हमें शुद्ध करेगा।

मैं परमेश्वर के एक सेवक को जानता हूँ। वह काम के साथ परमेश्वर की सेवकाई भी कर रहा था। एक दिन जब वह परमेश्वर की उपस्थिति में बैठकर ध्यान कर रहा था, तो उसे एक दर्शन हुआ कि यीशु अपने हाथों और पैरों में कीलों से जकड़े हुए क्रूस पर लटका हुआ है, उसका हाथ कांटों से ढका हुआ है और उसका चेहरा खून से लथपथ है। उसी क्षण वहाँ एक काली आकृति प्रकट हुई। वह पुरुष जैसी प्रतीत हो रही थी। लेकिन उसका चेहरा साफ नहीं था। वह आकृति यीशु मसीह के लटकते हुए शरीर को हिलाने लगी और जब वह हिले तो वह दर्द यीशु के चेहरे में देखा जा सकता था।

फिर वह भाग गया। जल्द ही वापस लौटा और फिर से मसीह के शरीर को हिलाया। उसने फिर से दो या तीन बार ऐसा किया। जब उस मिशनरी ने अपनी दृष्टि में यह देखा, तो उसने गुस्से में यीशु से क्रूस पर पूछा, "वह आदमी कौन है जो आपको बार-बार हिला रहा है और पीड़ा दे रहा है? और प्रभु ने कहा," तुम वह आदमी हो, क्या तुम जानते हो कि हर बार जब तुम बार-बार पाप करते हो, तो तुम मुझे पीड़ा देते हो। आदमी टूट गया और रोया।

जब उसने खुद को यह कहते हुए परमेश्वर को सौंप दिया कि वह पाप नहीं करेगा और उसे अब और पीड़ा नहीं देगा, तो परमेश्वर ने उसे एक सुंदर तमिल गीत दिया, 'एन कैगल पावांगल सेधित्ताल थम कैयिन कायमगल पारकिंद्रारे, थेये वाझीलिल एन कालगल सेंद्राल थम कालिन कयांगल पारकिंद्रारे ' (जब मेरे हाथ पाप करते हैं, तो वह अपने हाथों के घाव देखता है, जब मेरे पैर गलत रास्ते पर जाते हैं, तो वह अपने पैरों के घाव देखता है)।

क्रूस प्रकट करता है कि हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम कितना महान है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। रोमियों 5:8 में यह कहता है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (1 यूहन्ना 4:10) में भी यह कहा गया है, "प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु यह कि उसने हमसे प्रेम किया और अपने पुत्र को भेजा जो हमारे पापों का प्रायश्चित्त है।" यदि हम जानना चाहते हैं कि हमारे लिए प्रभु का प्रेम कितना महान है, तो हमें क्रूस पर लटके यीशु मसीह के सामने खड़ा होना चाहिए। तब ही हम उस प्रेम को समझ सकते हैं जो उनके पास हमारे लिए है।

हम क्रूस पर अपने प्रति उसके प्रेम को देख सकते हैं। उसका प्यार क्रूस पर प्रकट होता है। उसने हमारे लिए खुद को क्रूस पर दे दिया और हमें क्षमा का आश्वासन दिया। और हम इससे भी अधिक सौभाग्यशाली हैं कि वह हमें अपने बेटे और बेटियाँ कहता है।

हम कितने धन्य हैं! बदले में हम क्या दे सकते हैं इस प्यार के लिए? वह हमारे पापों के लिए मरा और वह क्रूस हमारे लिए उसके प्रेम को प्रकट करता है। हमारे स्वर्गीय पिता ने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिए क्रूस पर मरने के लिए दे दिया क्योंकि वह हमसे प्रेम करता था। उसका लहू हमारे सारे पापों को धो देता है..

***मेरे प्यारे युवाओं! क्या आप पाप में फँसे हो? क्या आप अपने पापों के कारण दोषी और चिंतित महसूस करते हैं? यीशु का लहू आपको क्षमा और शुद्ध करने के लिए है। यह कहते हुए खुद को क्रुस के सामने आत्मसमर्पण कर दें, "मैं यह पाप दोबारा नहीं करूंगा। मैं यीशु को फिर से क्रूस पर नहीं चढ़ाऊंगा। मैं हमेशा एक पवित्र जीवन जीऊंगा।" यीशु जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था वह तुम्हें क्षमा करेगा!***

# जागृति शिविर 2023

*(मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र)*

जैसा कि प्रभु ने वादा किया था, "मैं युवा पीढ़ी को बढ़ाऊंगा," वर्ष 2021 और 2022 में, 9000 से अधिक युवा, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और पूर्व-भारतीय राज्यों ने नालुमावदी की यात्रा की। जागृति का बोझ और दर्शन प्राप्त किया और अपने संकल्प के अनुसार अपने स्कूलों, कॉलेजों और गांवों में जागृति की आग को प्रज्वलित कर रहे हैं।इसी तरह, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, उत्तर भारतीय राज्यों महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश में युवा भी जागृति की आग से प्रज्वलित हो जाएं। 14 फरवरी, 15 और 16 फरवरी को 1155 युवाओं ने इन राज्यों से नालुमवाड़ी की यात्रा की और जागृति का दर्शन प्राप्त किया। इसमें, परमेश्वर के सेवक भाई। मोहन सी लाजर और भाई विंसेंट सेल्वाकुमार ने जागृति दर्शन और जागृति में युवाओं की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है को स्पष्ट रूप से समझाया। परमेश्वर ने जागृति के दर्शन के साथ उन सभी को भर दिया जो आए थे, और उन्हें अपार अभिषेक के साथ वापस भेज दिया। भाई मार्क और भाई जॉन एबेनेजर स्तुति और आराधना के खंडों का नेतृत्व किया। भाई बराका और भाई रवि ने हिंदी अनुवाद में हमारी मदद की। हर कोई जागृति की आग फैलाने की प्रतिबद्धता के साथ लौटा। परमेश्वर की स्तुति हो!

Revival
IGNITERS

# इस्पात राजा

## भारत से इंडोनेशिया तक

लक्ष्मी मित्तल

युवा विजेताओं को हार्दिक बधाई। हमारे जीवन में जो कुछ भी घटित होता है वह हमें कुछ न कुछ सीख देता है। हम जो सबक सीखते हैं, वे हमें गढ़ते और हमें कुछ सुंदर बनाते हैं, जिसे दूसरे देखते हैं और आश्चर्य करते हैं! आपके जीवन को और अधिक सुंदर बनाने के लिए, यहाँ एक विजेता का जीवन है !!!

लक्ष्मी मित्तल का जन्म 15 जून, 1950 को राजस्थान राज्य के एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी युवावस्था के दौरान, उसने बहुत ही साधारण जीवन व्यतीत किया। वह एक शर्मीला और अंतर्मुखी किशोर था। इस वजह से, वह दूसरों से बात करने में बहुत हिचकते थे। उन्होंने बचपन में अपनी स्कूली शिक्षा हिंदी माध्यम के स्कूल से पूरी की। नतीजतन, कॉलेज में पढ़ते समय सहज अंग्रेजी नहीं बोल सकते थे। इस वजह से उनमें हीन भावना व्याप्त हो गई थी। वे अनेक पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने और स्नातक करने के इच्छुक थे। लेकिन वह बीकॉम ही पढ़ पाए।

जैसा कि लक्ष्मी मित्तल के पिता एक स्टील कंपनी में भागीदार थे, व्यवसाय को देखते हुए, स्कूल खत्म करने के बाद उनका परिवार कलकत्ता आ गया। कॉलेज में पढ़ने के दौरान, लक्ष्मी मित्तल अपने पिता की स्टील फैक्ट्री में दिन में कम से कम 15 घंटे काम करते थे।उसने कड़ी मेहनत करनी शुरू कर दी। इस स्थिति में, भारत सरकार ने भारत में इस्पात उत्पादन पर अंकुश लगा दिया। लेकिन इसने लक्ष्मी मित्तल को नहीं रोक सका। उन्होंने स्थिति को देखते हुए अपना व्यवसाय नहीं बदला। आगे क्या करना है, इस पर विचार करने के बाद, उन्होंने इंडोनेशिया में एक इस्पात निर्माण संयंत्र खरीदा, इसे पुनर्निर्मित किया और इस्पात का निर्माण शुरू किया। उन्हें इसमें बड़ी सफलता मिली। उन्होंने विश्व को इस्पात उत्पादन की ओर फिर से देखने का अवसर दिया। मित्तल का कारोबार धीरे-धीरे सभी देशों में फैल गया। उन्होंने अपने कारखानों में एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार दिया। उनके लगातार प्रयासों और अविश्वसनीय आत्मविश्वास के कारण उन्हें "मित्तल - स्टील किंग" कहा जाता था।

2004 में, 'मित्तल स्टील' 42.1 मिलियन टन स्टील का उत्पादन करने वाला दुनिया का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक बन गया। कंपनी ने 22 बिलियन डॉलर से अधिक का मुनाफा कमाया। उन्होंने अपने प्रतिस्पर्धी आर्सेलर को भी खरीदा और आर्सेलर मित्तल के नाम से दुनिया की सबसे बड़ी स्टील कंपनी बनाई। यह अब दुनिया की सबसे बड़ी स्टील निर्माण कंपनी है, जो प्रति वर्ष 70 मिलियन टन स्टील का उत्पादन करती है। उन्हें भारत सरकार से पद्म विभूषण पुरस्कार, यूरोपियन बिजनेस मैन ऑफ द ईयर -2004, और स्टील मेकर ऑफ द ईयर - 1996 जैसे विभिन्न पुरस्कार मिले।वह दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक बना हुआ है। भारत में जन्मे और वर्तमान में इंग्लैंड में रह रहे हैं, वह विभिन्न देशों में इस्पात उत्पादन का नेतृत्व करते हैं।

युवा विजेता जो इसे पढ़ रहे हैं! निराश मत हों। लक्ष्मी मित्तल इस चोटी पर आसानी से नहीं पहुंचे। हालाँकि वह शर्मीला और हीन था, लेकिन उसने उन सभी बाधाओं को दूर कर दिया, जो उसके विकास में बाधक थीं, कड़ी मेहनत की, उस पर काबू पाया और सफलता प्राप्त की। जब आप कड़ी मेहनत करते हैं और अपने समय का बुद्धिमानी से उपयोग करने का प्रयास करते हैं, तो आप भी लक्ष्मी मित्तल की तरह बन सकते हैं। सफलता आपका इंतजार कर रही है। इसे मत खोएं!

परामर्श में महान

# यरीहो की दीवारें

## और परमेश्वर की आश्चर्यजनक योजना

क्या 7 दिनों तक एक बहुत मजबूत दोगुने परत वाली दीवार के चारों ओर प्रयाण करना उसे गिरा सकता है? हाँ यह होगा! क्योंकि हमारा परमेश्वर वह है जो अपने प्रिय लोगों को बाधा डालने वाली किसी भी चीज़ को नष्ट कर सकता है।

प्रिय युवाओ! इस खंड में, हम यरीहो की शहरपनाह, जो इस्राएलियों के विरुद्ध बन्द थी, को बिना युद्ध या किसी आक्रमण के गिराने के लिए यहोवा द्वारा उपयोग की गई युक्तियों को पढ़ना जारी रखेंगे।

जब इस्राएली वादा किए गए देश कनान से कुछ कदम आगे थे, तो वे यर्दन की बाढ़ से अवरुद्ध हो गए। चमत्कारिक रूप से इसे पार करने के बाद, यरीहो की वर्जित दीवार ने उनका इंतजार किया। यदि आप अपने जीवन में संघर्षों और अवरुद्ध दरवाजों का सिलसिला देखते हैं, तो विश्वास करें कि बाधाओं को तोड़ने वाला आपके सामने से गुजर रहा है।

यरीहो की दीवारों का निर्माण लगभग 8000 ईसा पूर्व में हुआ था। यह यरदन की तराई का एक नगर है। यह दीवार बारिश के कारण लोगों को बाढ़ से बचाने के लिए बनाई गई थी। क्या आप जानते हैं कि इस दीवार को पार करने के लिए परमेश्वर की क्या रणनीति थी? यह सिर्फ दीवार के चारों ओर प्रयाण करना!

जैसा यहोवा ने आज्ञा दी "आगे बढ़ो, और नगर के चारों ओर घूमो, और जो हथियारबन्द हो यहोवा के सन्दूक के आगे आगे बढ़े"। यहोशू ने इस्राएल के लोगों को लगातार सात दिनों तक शहरपनाह के चारों ओर चलने के लिए तैयार किया।यरीहो के लोग इस्राएल के लोगों को बिना किसी आक्रमण के शहरपनाह के चारों ओर घूमते हुए देखकर भ्रमित हो गए। जैसा यहोवा ने कहा था, सातवें दिन जब वे शहरपनाह के चारों ओर सात बार घूमे, तब याजकों ने नरसिंगे फूंकें, और लोग ऊंचे शब्द से ललकारते थे, तो शहरपनाह नेव से गिर गई।

अपने जीवन में ऐसी असाधारण चीजों का सामना करने के लिए, हमें इस घटना में नीचे दिए गए विवरणों पर ध्यान देना चाहिए;

- यरीहो को इस्राएलियों के सामने बन्द कर दिया गया। कोई अंदर नहीं गया और कोई बाहर नहीं गया।" इस स्थिति में, यहोशू ने प्रभु की ओर देखा। इसलिए, हमें भी किसी भी स्थिति में प्रभु की उपस्थिति में जाने के लिए ध्यान रखना चाहिए।
- जब यहोशू ने लोगों को परमेश्वर की योजना के बारे में बताया, तो वे कुड़कुड़ाए नहीं, 'यह कैसे हो सकता है' नहीं पूछा और देर नहीं की। उन्होंने तुरन्त परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार कार्य किया। इसी तरह, ऐसी परिस्थितियों में हमें भी बिना देर किए तुरंत परमेश्वर के वचन को सुनना और उसका पालन करना चाहिए।
- क्या आप इतनी बड़ी दीवार के गिरने का रहस्य जानते हैं जो यरीहो शहर की पहचान, महिमा और गौरव थी? यह आज्ञाकारिता थी (यहोशू 1:2-16)। क्योंकि यहोशू और उसके लोग यहोवा का वचन मानने को तैयार थे, परमेश्वर ने उन सभी बाधाओं को तोड़ दिया जो उनके खिलाफ थे।

प्रिय युवाओ! हमारा परमेश्वर सिर्फ बंद दरवाजों को खोलने वाला नहीं है! वह एक परमेश्वर है जो बंद दरवाजे को तोड़ता है ! क्योंकि वह लोहे की सलाखें तोड़ने वाला है। अपने जीवन में असाधारण चमत्कार का ऐसा अनुभव करने के लिए, धैर्यपूर्वक उसके शब्दों को सुनें, उन्हें समझें और उनका पालन करें तब लड़ाई परमेश्वर की हो जाएगी क्योंकि वह सलाह में महान हैं!

Prayer: Bennita

# अप्रैल 2023 प्रार्थना गाइड

## चुनाव

1. आइए हम 2024 में होने वाले संसदीय चुनावों में परमेश्वर के शासन के लिए प्रार्थना करें और यह भी कि परमेश्वर के चुने हुए लोग चुने जाएं।

2. आइए हम प्रार्थना करें कि 91 करोड़ मतदाता पूरी जिम्मेदारी के साथ मतदान करें और फर्जी वोट डालने की कोशिशों को पूरी तरह से रोका जाए।

3. हम दुआ करें कि चुनाव जीतने की नीयत से जादू-टोना, टोना-टोटका आदि करने वालों की योजना बेकार हो जाए.

4. आइए हम उन मंत्रों के विनाश के लिए प्रार्थना करें जिनमें चुनाव जीतने के लिए खून बहाना और प्राणों की आहुति देना शामिल है।

5. आइए हम प्रार्थना करें कि मुख्य चुनाव आयुक्त और उनकी टीम बिना किसी पक्षपात के नियमों का सख्ती से पालन करें और उन्हें लागू करें।

6. आइए हम प्रार्थना करें कि संबंधित जिलों के चुनाव अधिकारी और पुलिस अधिकारी बिना किसी पक्षपात के काम करें।

7. आइए हम प्रार्थना करें कि चुनाव की तैयारी कर रही पार्टियां किसी भी गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल न हों।

## जागृति

8. आइए हम दुनिया भर के 8 अरब लोगों के लिए सच्चाई जानने और बचाए जाने के लिए प्रार्थना करें।

9. आइए हम दुनिया भर के सभी चर्चों में जागृति के लिए प्रार्थना करें।

10. आइए हम प्रार्थना करें कि झूठी शिक्षाओं को दबा दिया जाए और ऐसी बातें जो झूठी जागृति लाती हैं और लोगों को धोखा देती हैं, कलीसियाओं से निकाल दी जाएँ।

11. आइए हम प्रार्थना करें कि शैतान के कार्य जो जागृति के खिलाफ खड़े होते हैं, नष्ट और बंधे हुए हों।

12. हम उन आत्माओं के बन्धन में रहने के लिये प्रार्थना करें, जो झूठी जागृति लाने का काम करते हैं, और कपट से भरके सेवकों और झूठे सेवकों को खड़ा करते हैं, और लोगों को भरमाते हैं।

13. आइए हम प्रार्थना करें कि नवयुवकों और छोटे बच्चों पर आत्मिक जागृति की आग उंडेली जाए और युवा और बच्चे आत्मिक जागृति के सूत्रधार बनें।

14. आइए हम ईमानदारी से प्रार्थना करें कि, परमेश्वर इन युवाओं और बच्चों के माध्यम से चमत्कार करें जैसा कि बाइबिल में शुरुआती प्रेरितों के दिनों में हुआ था।

# चिकित्सा विभाग

15. आइए हम प्रार्थना करें कि हमारे देश भर में लगभग 70,000 अस्पताल संचालित हो रहे हैं में सही कार्य हों।

16. प्रार्थना करें कि हमारे देश में कार्यरत सभी 37, 725 सरकारी अस्पतालों में उचित इलाज हो और यह भी प्रार्थना करें कि पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों की नियुक्ति हो।

17. आइए हम प्रार्थना करें कि 3000 दवाएँ गुणवत्तापूर्ण दवाएँ बनाएँ।

18. भारत में 3 में से 2 डॉक्टर उचित चिकित्सा डिग्री के बिना चिकित्सा का अभ्यास कर रहे हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि इस तरह के कृत्य को रोका जाना चाहिए।

19. प्रार्थना करें कि भारत के हर गाँव में उचित चिकित्सा सुविधा पहुँचे और अधिकृत डॉक्टरों की नियुक्ति की जाए।

20. आइए हम प्रार्थना करें कि गलत इलाज और लापरवाही से होने वाली मौत को रोका जाए और सही समय पर सही इलाज मुहैया कराया जाए।

21. आइए हम प्रार्थना करें कि चिकित्सा विभाग में काम करने वाले हर डॉक्टर और नर्स को ज्ञान और अनुग्रह मिले।

# छात्रों की सुरक्षा

22. आइए हम अपने देश में पढ़ने वाले 14 लाख स्कूली छात्रों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

23. आइए हम स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले 32 करोड़ छात्रों के खिलाफ किसी भी तरह के यौन उत्पीड़न या उत्पीड़न को खत्म करने के लिए प्रार्थना करें।

24. आइए हम प्रार्थना करें कि विशेष शैक्षिक संगठन और छात्राओं के यौन उत्पीड़न से जुड़े शिक्षकों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाए।

25. आइए हम उन आत्मघाती आत्माओं के दमन के लिए प्रार्थना करें जो स्कूल और कॉलेज के छात्रों के बीच उत्पन्न होती हैं और कार्य करती हैं।

26. आइए हम प्रार्थना करें कि लड़कियों की सुरक्षा यौन शोषण से सुरक्षित रहे और वासना की भावना बंधी रहे।

27. आइए हम उन आत्माओं को बांधें और उनके खिलाफ प्रार्थना करें जो स्कूल और कॉलेज के छात्रों को गलत रिश्तों में शामिल होने के लिए उकसाती हैं।

28. आइए हम विद्यार्थियों के विरुद्ध शैतान की योजना के विनाश के लिए प्रार्थना करें।

# शराब की दुकानें

29. आइए हम प्रार्थना करें कि तमिलनाडु में चल रही 5300 शराब की दुकानों को बंद कर दिया जाए और शराब की लत से होने वाली मौतों को रोका जाए।

30. आइए हम प्रार्थना करें कि जो लोग शराब के आदी हैं, उन्हें छुड़ाया जाए और वे यीशु को उनके व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें।

*प्रत्येक दिन एक मिनट लें और उस विशेष तिथि पर दिए गए प्रार्थना विषयों के लिए पूरे मन से प्रार्थना करें!*

# द ट्रैक
## जागृति की दौड़

इस श्रृंखला 'द ट्रैक' के माध्यम से हम हर महीने उन लोगों के बारे में देखते हैं जो परमेश्वर के लिए दौड़े थे और मैराथन धावकों के बारे में भी। परमेश्वर के लोगों के तीव्र प्रवाह ने बहुतों को मुक्त किया और आशीषित किया। यदि लोगों को हमारे द्वारा छुड़ाया और आशीषित किया जाना है, जिन्हें इस अंतिम समय की जागृति के लिए चुना गया है, तो हमें ईमानदारी से दौड़ना चाहिए और जोश से कार्य करना चाहिए। लेकिन कभी-कभी समस्याएँ, संघर्ष और पीछे हटना हमारी दौड़ में बाधा डालते हैं। इतना ही नहीं, यह हमें गलत दिशा में भी दौड़ाता है। आइए देखें कि इन बाधाओं को कैसे पार किया जाए और परमेश्वर के लिए जागृति में दौड़ें।

जून 2022 में, स्वीडन की राजधानी शहर स्टॉकहोम में अंतर्राष्ट्रीय मैराथन का आयोजन किया गया था। केन्याई मैराथनर फेलिक्स किर्वा ने प्रतियोगिता में भाग लिया। उसके जीतने की उम्मीद थी। दौड़ शुरू होने के कुछ ही देर बाद फेलिक्स किर्वा ने सबको पीछे छोड़ दिया और आगे की ओर दौड़ने लगे। मैराथन मार्ग पर धावक का मार्गदर्शन करने के लिए स्वयंसेवकों को नियुक्त किया गया, फेलिक्स किर्वा को गलत रास्ते पर ले गए। परिणामस्वरूप फेलिक्स किर्वा 1.1 किमी तक गलत ट्रैक पर दौड़ा। गलती का अहसास होने पर टूर्नामेंट आयोजकों ने उसे फिर से सही रास्ते पर दौड़ा दिया। सभी ने सोचा कि इससे उनकी जीत प्रभावित होगी।

लेकिन वह नहीं चाहता था कि यह गलती उसे जीतने से रोके, इसलिए उसने कड़ी मेहनत की और शीर्ष स्थान हासिल कर सभी को चौंका दिया। शायद अगर उसने सोचा होता कि, मैं भटक गया हूँ; मैं अब और नहीं जीत सकता', उसने वह जीत हासिल नहीं की होती।

जब हम फेलिक्स किर्वा के बारे में पढ़ते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि 'यदि कोई व्यक्ति हमारा मार्गदर्शन करता है, तो इसके गलत होने और यहां तक कि नुकसान होने की संभावना अधिक होती है।'

लेकिन जब हम यीशु पर भरोसा करते हैं और जब वह हमारा मार्गदर्शन करते हैं, तो कोई दोष नहीं होगा और भागना बाधित नहीं होगा। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस है। उसकी सफलता का कारण क्या था?

## उसने साहसपूर्वक काम किया।

फिलिप्पुस की सेवकाई के दिनों में क्लेश और संकट बहुत अधिक थे। यह तब था जब स्तिफनूस की एक शहीद के रूप में मृत्यु हो गई। जागृति के प्रसार को रोकने के लिए बाधाएँ, परेशानियाँ, उत्पीड़न और कारावास लगातार थे। ऐसी परिस्थितियों में भी, फिलिप्पुस का दौड़ना बाधित नहीं हुआ (प्रेरितों के काम 8:6)। वह सक्रिय रूप से सुसमाचार का प्रचार कर रहा था। इसका कारण यह है, बाइबल कहती है कि 'फिलिप्पुस पवित्र आत्मा और बुध्दि से परिपूर्ण था' (प्रेरितों के काम 6:3)।

जब पवित्र आत्मा की परिपूर्णता होती है, तभी किसी के पास वह साहस और विश्वास होगा जो परमेश्वर के लिए निडरता से कार्य करने के लिए आवश्यक है। फिलिप्पुस के सुसमाचार प्रचार न करने के कई कारण और बाधाएँ थीं। परन्तु वे सब पवित्र आत्मा की शक्ति के आगे चूर चूर हो गए। अंग्रेजी में एक प्रसिद्ध कहावत है कि "भाग्य बहादुर का साथ देता है।" इसका अर्थ है, "भाग्य उसी को फलवन्त करता है जो साहसपूर्वक कार्य करता है।"

उसी तरह, परमेश्वर उन लोगों का उपयोग करना चाहता है जो सेवकाई में उसके लिए साहसपूर्वक कार्य करते हैं। जब फिलिप्पुस ने परमेश्वर के लिए बहादुरी से सेवा की, तो पवित्र आत्मा के वरदानों और सामर्थ ने उसके द्वारा कार्य किया। बहुत से लोग मुक्त हुए और उसके द्वारा बचाए गए। आज, परमेश्वर उन युवाओं की तलाश कर रहे हैं जो उनके लिए साहसपूर्वक कार्य करने का साहस करते हैं। वह उन्हें वरदानों और सामर्थ से भरने और उनका उपयोग करने के लिए तैयार है। इसलिए आइए उन विरोधों, संघर्षों और समस्याओं पर विजय प्राप्त करें जो हमें पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा ऊपर उठने से रोकते हैं और इस जागृति में तीव्रता से कार्य करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें।

## उसने आत्मा की आवाज को ध्यान से सुना।

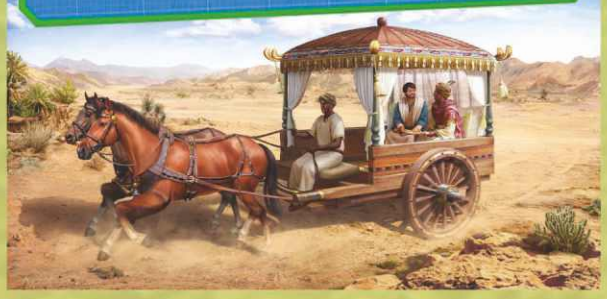

फिलिप्पुस ने यीशु के लिए महान कार्य करने का एक अन्य कारण यह था कि वह आत्मा की आवाज सुनने के लिए सावधान था। आत्मा ने उसे सिखाया कि कहाँ जाना है और क्या कहना है। प्रेरितों के काम अध्याय 8 में, पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से जंगल में जाने को कहा। फिर उसने उसे उस रास्ते से आए इथियोपियाई मंत्री के रथ के साथ होने के लिए कहा।

एक राष्ट्र के एक मंत्री को बचाया गया क्योंकि फिलिप्पुस ध्यान दे रहा था और आत्मा के सभी संकेतों पर काम कर रहा था। यदि फिलिप्पुस ने सोचा होता कि, "जंगल में कोई न रहेगा, और जहां कोई न हो वहां मैं क्या करूंगा?" प्रभु की आवाज न सुनता तो मंत्री को बचाया नहीं जा सकता था।

बाइबिल के शोधकर्ता अनुमान लगाते हैं कि इथियोपियाई मंत्री द्वारा प्रचार किया गया सुसमाचार इथियोपिया की भूमि और अफ्रीकी महाद्वीप के भीतर चला गया हो सकता है। भरोसा करना, विश्वास करना, और आत्मा की अगुआई पर कार्य करना न केवल एक व्यक्ति या एक राष्ट्र के लिए बल्कि एक महाद्वीप के लिए भी आशीष लेकर आया। जब हम भी उस आत्मा की आवाज़ सुनते हैं जो हमारे भीतर निवास करती है, तो हम न केवल एक मनुष्य के लिए, बल्कि एक राष्ट्र के लिए आशीष बन सकते हैं।

प्रिय युवाओ! आज दुनिया पैसे, नाम, शोहरत और सांसारिक इच्छाओं के पीछे भाग रही है। इस व्यस्त संसार में, क्या हम यीशु को गंभीरता से खोज रहे हैं जो उसके बहुमूल्य लहू से छुड़ाए गए हैं? या हम दुनिया के पीछे भाग रहे हैं? आइए सोचें कि हम किसके पीछे भाग रहे हैं। फसल भूमि में बहुतायत से है।

साथ ही, बढ़ते विरोध और संघर्ष के इस समय में, हमारी दौड़ तभी सफल हो सकती है जब हम पवित्र आत्मा से भरे हों और उसकी आवाज़ पर ध्यान देकर दौड़ें। अगर हम आत्मा की आवाज नहीं सुनते हैं, लेकिन मनुष्य या स्वयं की आवाज पर निर्भर करते हैं, तो हम असफल होंगे या भटक जाएंगे।

इसलिए, यदि हम अपने लिए नियुक्त दौड़ को धैर्यपूर्वक, सावधानी से, केवल यीशु पर निर्भर होते हुए दौड़ें, चाहे हम किसी भी प्रकार के संकट और क्लेश का सामना करें, तो परमेश्वर हमें अनगिनत आत्माओं से मिलने का, उन्हें उद्धार की ओर ले जाने, और जागृति फैलाने का अनुग्रह देगा।

*"परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।"*
*(यशायाह 40:31)*

# वादे और शर्तें

# यूसुफ

हैलो प्रिय युवा विजेताओं, आशा है कि आप सभी अच्छा कर रहे हैं!इस महीने हमारी 'वादों और शर्तों' की श्रंखला में हम एक युवक यूसुफ के अनुभवों के बारे में जानने वाले हैं। जिस परमेश्वर ने हमारे बहुत से पूर्वजों को प्रतिज्ञाओं के द्वारा आशीष दी, उसने यूसुफ को उसके भविष्य के स्वप्न दिए। वह सपना क्या था?

उस ने कहा, हम तो वहां मैदान में पूले बान्ध रहे थे, तब क्या देखता हूं, कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया, और तुम्हारे पूले चारों ओर खड़े होकर मेरे पूले को दण्डवत करने लगे। (उत्पत्ति 37:7) और "फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका यों भी वर्णन किया, और कहा, 'देखो, मैं ने एक और स्वप्न देखा है, और इस बार सूर्य, चन्द्रमा, और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।" (उत्पत्ति 37:9)। पवित्रशास्त्र कहता है कि दूसरे स्वप्न के कारण, उसके पिता ने उसे यह कहते हुए डांटा, "क्या तेरी माता और मैं और तेरे भाई सचमुच तेरे साम्हने भूमि पर उतर आएं?" (उत्पत्ति 37: 10)। ये स्वप्न मिस्र देश में पूरे हुए, जहाँ वह दास बना लिया गया था। (उत्पत्ति 37:36)

## प्यारा बेटा

यूसुफ का अर्थ है "वृद्धि" या "बढ़ाने वाला"।

यूसुफ बचपन से ही प्रभु के साथ और अच्छे चरित्र के साथ बड़ा हुआ था। परमेश्वर ने उसे बचपन से ही सपने देखने का उपहार दिया था। चूंकि यूसुफ अपने बुढ़ापे में इस्राएल के पहले बच्चे के रूप में पैदा हुआ था, इसलिए उसे दूसरों की तुलना में अधिक प्यार किया गया था। इस्राएल ने उसे सुंदर कपड़े दिए और ऐसा करने में आनन्दित हुआ। उसने अपना सारा प्यार यूसुफ पर बरसाया। यूसुफ अपने पिता इस्राएल का एक प्रिय बेटा था।

## गड्ढे में प्यारा

यूसुफ के भाई उससे नफरत करते थे, क्योंकि सभी भाइयों के बीच, उनके पिता यूसुफ से सबसे अधिक प्रेम करते थे। उसके भाइयों ने उसके स्वप्नों के कारण उस से और भी अधिक बैर किया, और कहा, "क्या तू सचमुच हम पर राज्य करेगा?"

जब यूसुफ जंगल में अपने भाइयों की भलाई खोजने के लिये आया, तब उन्होंने उसे दूर से देखकर आपस में कहा, 'कि स्वप्न देखनेवाला आ रहा है'। उसके निकट आने से पहले ही उन्होंने उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा और इस प्रकार उन्होंने अपने पिता के प्यारे बेटे को एक गड्ढे में फेंक दिया। (उत्पत्ति 37:5,8,18,24)

## गड्ढे से जेल में

उन्होंने उसको गड़हे में से निकाला, और उन व्यापारियोंके हाथ जो गिलाद से मिस्र को जाते थे, चान्दी के बीस टुकड़ों के लिए दास करके बेच डाला। और व्यापारियों ने यूसुफ को मिस्र में पोतीपर को बेच डाला, और जहां वह उसके घर में दास हो गया। हो सकता है यूसुफ यह सोच कर चिंतित हो गया होगा, "मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि यह सब होगा। क्या प्रभु मेरे साथ हैं? क्या यह प्रभु का मार्ग है?" दिन बीतते गए। यह उस समय था

जब वह अपने स्वामी के लिए एक भरोसेमंद व्यक्ति था, उसके स्वामी की पत्नी के माध्यम से एक और परीक्षा आई।

जब पाप करने और युवावस्था की वासना को पूरा करने का अवसर मिला, तो यूसुफ ने कहा, 'मैं अपने परमेश्वर के खिलाफ इतनी बड़ी दुष्टता और पाप कैसे कर सकता हूं। इसलिए वह अपने कपड़े छोड़कर भाग गया। यूसुफ पर झूठा आरोप लगाया गया और उसे एक ऐसे अपराध के लिए कैद कर दिया गया जो उसने किया ही नहीं था।

## जेल से महल

यूसुफ का जीवन जेल में समाप्त नहीं हुआ। एक दिन ऐसा आया जब राजा फिरौन ने एक स्वप्न देखा और मिस्र के जादूगरों में से कोई भी इसका अर्थ समझाने में सक्षम नहीं था। इसलिए, यूसुफ शीघ्र ही कैदखाने से मिस्र के राजा फिरौन के सामने महल में लाया गया और उसके सामने खड़ा हुआ। (उत्पत्ति 41:14)

जब फिरौन को उसके स्वप्न का उत्तर मिला, तब उस ने यूसुफ को अपने देश के लोगों को उस बड़े अकाल से बचाने का उत्तरदायित्व सौंपा, जो आनेवाला था, और उसको मिस्र के सारे देश का अधिकारी भी नियुक्त किया।

## महलक्ष से राष्ट्रपति

तब फिरौन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से उतारकर यूसुफ के हाथ में पहिना दी; उसने उसे दूसरे रथ पर चढ़ाया और उसे बड़ा अधिकार दिया और यूसुफ को देश के शासक के रूप में खड़ा किया। पूरा मिस्र देश उसके नियंत्रण में आ गया (उत्पत्ति 41:41-44)।

इतना ही नहीं, जैसा कि यूसुफ ने स्वप्न में देखा था, कि जो भाई उस से बैर रखते थे, और उसे व्यापारियों के हाथ बेच डाला था, उसी के अनुसार परमेश्वर ने उन्हें यूसुफ के पांवों पर गिरा दिया। (उत्पत्ति 42:6, 43:26, 28)। वह अपने पिता से भी मिला जिससे उसने सोचा कि वह कभी नहीं मिलेगा और आनन्दित हुआ (उत्पत्ति 46:29) मेरे प्यारे बेटे! बेटी! 17 वर्ष की आयु में यूसुफ को दास के रूप में मिस्र ले जाया गया, और 30 वर्ष की आयु में वह मिस्र का राज्यपाल बना। यह पलक झपकते या आसान तरीके से नहीं हुआ। लगभग 13 वर्षों तक उन्होंने बहुत कुछ सहा।

परमेश्वर के माध्यम से उसे अपमान, तिरस्कार, भूख, भूखमरी, आँसू, जेल के रास्ते से जाने दिया, वह अपने स्वामी के सामने वफादार और ईमानदार था, कि सभी कह सकते थे कि 'परमेश्वर यूसुफ के साथ था।' परमेश्वर ने उसे एक उच्च पद दिया कि कोई न तो समझ सकता है और न ही सिफारिश कर सकता है। कारण यह है कि उसके मार्ग हमारे मार्गों से ऊँचे हैं। हालेलुयाह!

मेरे प्यारे बच्चों! क्या तुम यह सोच कर रो रहे हो, 'मेरे जीवन में ये आँसू क्यों? लगातार ऐसी असफलताएं क्यों? इतनी कठिनाइयाँ क्यों? यह अकेलापन क्यों? यह कारावास क्यों? क्या परमेश्वर मेरे साथ नहीं है? क्या आपको ऐसा लग रहा है जैसे आपको एक भयानक गड्ढे में फेंक दिया गया हो? क्या आप बिना किसी गलती के पीड़ित हैं? क्या आप ऐसे विचारों पर लड़खड़ा रहे हैं - क्या परमेश्वर मेरे साथ है? क्या यह परमेश्वर का तरीका है? चिंता न करें। तुम्हारे लिए एक छुड़ानेवाला है, जो दयालु है, जो तुम्हें बाहर ले आया (भजन संहिता 40:2) और तुम्हें लेपालकपन की आत्मा दी, जिसके द्वारा तुम अब्बा, पिता पुकारते हो (रोमियों 8:15) और तुम्हें बंधुआई से लौटा ले आए (व्यवस्थाविवरण 30:3)। चिंता न करें। परमेश्वर उन निन्दा करनेवालों को तेरे सामने लाएगा और दीन करेगा।

युवा यूसुफ की तरह, जो पाप से भाग गया था, चाहे उसका सिर कट जाए या कैद, आप भी पाप से दूर भागें और अपनी पवित्रता की रक्षा करें।

एक शाही सम्मान आपकी प्रतीक्षा कर रहा है!

# Coffee with रिपोर्टर

## डाकू जो स्वर्ग के योग्य बना!

पवित्र शास्त्रों में, ऐसे लोग हैं जिन्हें उनके कर्मों, वाणी या प्रार्थना से जाना जाता है, बिना नाम के उनका उल्लेख किया जाता है। आंकड़ों में उल्लेखनीय वह डाकू है जिसे यीशु के साथ क्रुस पर चढ़ाया गया था, जो स्वर्ग के योग्य बन गया। जैसा कि हम इस महीने मसीह के पुनरुत्थान का जश्न मनाते हैं, आइए हम अपने रिपोर्टर और इस व्यक्ति के बीच बातचीत की कल्पना करें, अगर वे एक-दूसरे से मिले होते।

**रिपोर्टर:** हैलो भईया!

**डाकू:** हैलो!

**रिपोर्टर:** क्या आप हमारे युवाओं को क्रूस पर यीशु के साथ अपना अनुभव साझा कर सकते हैं?

**डाकू:** प्रिय भाई, मैं प्रार्थना या आस्था का योद्धा, शिष्य या प्रेरित नहीं हूँ।

मैं एक डाकू था जिसे सदूकियों, फरीसियों और सभी मनुष्यों द्वारा मौत की सजा दी गई थी, मुझे एक दुष्ट व्यक्ति कहा गया था, जो मृत्युदंड के योग्य था, और क्रूस पर मौत के घाट उतार दिया जाना था। आपने मुझे साक्षात्कार के लिए क्यों चुना है?

**रिपोर्टर:** भाई, हर आदमी अपनी मृत्यु के बाद ही जानता है कि क्या वह अनन्त जीवन या अनन्त विनाश के लिए ठहराया गया है। लेकिन मरने से पहले ही, आपने यीशु से एक प्रतिज्ञा ली थी कि आप स्वर्ग में होंगे। सचमुच तुम महान हो!

**डाकू:** हाँ, उसकी दया मेरे प्रति बहुत बड़ी थी। अच्छा ... मैं इसे आपके साथ विस्तार से साझा करता हूँ। पहले तो मैंने यीशु को अपने जैसा एक साधारण मनुष्य समझा। जो लोग हमारे क्रूस के पास से गुजरे थे, उन्होंने यीशु की बुरी तरह निंदा की। उन्होंने यह कहते हुए उसका मज़ाक उड़ाया, "इसने औरों को बचाया, अपने आप को नहीं बचा सकता।" यहाँ तक कि हम बदमाश भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, उसकी निन्दा करते थे।

**रिपोर्टर:** क्या यीशु ने इस पर कुछ प्रतिक्रिया की?

**डाकू :** नहीं, वह चुप था। लेकिन उसका चेहरा दुख से भरा था।

**प्रतिनिधि:** ऐसा क्या?

**डाकू:** यीशु ने जो पहला शब्द बोला था, पिता! उन्हे माफ कर दो! मैं इन शब्दों से प्रभावित हुआ।

**रिपोर्टर:** कैसे?

**डाकू:** यीशु सबका भला करता फिरा। फरीसियों और सदूकियों ने ईर्ष्या की और उसे मौत की सजा सुनाई। क्रूस पर जिन यातनाओं को उसने सहा वह अवर्णनीय है। उसके शरीर का हर अंग पीड़ा से धड़क रहा था। वह बोल भी नहीं सकता था। उस स्थिति में भी उन्होंने क्रोध से कुछ नहीं कहा और न ही किसी को श्राप दिया।

उसके मन में बदला लेने की कोई इच्छा नहीं थी। इसके बजाय, उसने प्यार से भरे दिल से हर उस बुराई को माफ कर दिया जो उन्होंने उसके साथ की थी। जिन्होंने उसे चोट पहुँचाई, उसने माफी नहीं माँगी। उन्हें नहीं लगा कि उन्होंने जो किया है वह गलत है। एक सामान्य व्यक्ति के लिए इतनी बड़ी पीड़ा में अपने पिता से उन दुष्टों, पत्थर-हृदय लोगों की क्षमा के लिए प्रार्थना करना असंभव है, जो उन्हें दंडित नहीं करना चाहते हैं जिन्होंने उन्हें बहुत पीड़ा दी है। तभी मुझे एहसास हुआ कि यीशु विशेष और दिव्य थे।

**रिपोर्टर:** आप उन लोगों के बारे में क्या सोचते हैं जिन्होंने आपको क्रूस पर चढ़ाया?

**डाकू:** भले ही मुझे अपने कर्मों के लिए उचित रूप से दंडित किया गया था, फिर भी मैं उन्हें क्षमा नहीं कर पाया। मेरे मन में उन पर बहुत क्रोध था और मैं मन ही मन उन्हें कोस रहा था।

**रिपोर्टर:** उसके बाद क्या हुआ?

**डाकू:** जब मैंने अपनी तुलना यीशु से की तभी मुझे एक समझदार हृदय मिला। मेरी आत्मा ने स्वीकार किया कि वह परमेश्वर का पुत्र है। वे सब बातें जो यीशु ने कही थीं और जो बातें मैं ने उसके विषय में सुनी थीं वे सब मेरे मन में आ गईं। मुझे विश्वास था कि यीशु ने जो कुछ कहा वह सच था।

**रिपोर्टर:** क्या दूसरा मित्र जो आपके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, यीशु में विश्वास किया?

**लुटेरा:** नहीं। वह संसार की केवल अस्थायी आशीषें चाहता था।

अर्थात्, वह चाहता था कि 'यीशु, परमेश्वर का पुत्र, अपनी दिव्य शक्ति द्वारा स्वयं को क्रूस पर मृत्यु से मुक्त करके स्वयं को सिद्ध करे और हमें भी मुक्त करे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, इसलिए उसने यीशु पर विश्वास नहीं किया।

**रिपोर्टर:** आपने अपने मित्र को यीशु को स्वीकार करने के लिए क्या किया?

**डाकू:** मैंने उसे परमेश्वर से डरने की सलाह दी।

मैंने उसे यह कहते हुए डांटा, "और हम वास्तव में दोषी हैं, क्योंकि हम अपने कामों का उचित प्रतिफल प्राप्त करते हैं; लेकिन इस आदमी ने कुछ भी गलत नहीं किया है" जब उसने यीशु की निंदा की। पर उसने इसे गंभीरता से नहीं लिया।

**रिपोर्टर:** हम्म... फिर क्या हुआ?

**डाकू:** हम तीनों मौत के कगार पर थे।

इसलिए मैं कोई समय बर्बाद नहीं करना चाहता था।

मैंने बाद के जीवन के विचार से यीशु से विनती की।

**रिपोर्टर:** वह शायद आपकी पहली और आखिरी विनती थी। सही?

**डाकू:** हाँ, भाई।उसी समय मैंने यीशु से विनती की थी। उसने इसे एक बार में स्वीकार कर लिया। उसे इस बात से घृणा नहीं थी कि मैं पापी या दुष्ट व्यक्ति था। उन्होंने मुझे प्यार से स्वीकार किया और तुरंत स्वर्ग का वादा किया। उसका प्रेम और दया बहुत महान है।(पढ़ें: लूका 23:39-43)

**रिपोर्टर:** वास्तव में आप धन्य हैं! आपने जीवन के अंतिम क्षण में यीशु से सबसे बड़ी आशीष प्राप्त की है। अच्छा भाई, आप हमारे युवाओं को क्या कहना चाहेंगे?

**डाकू:** पवित्र बाइबल कहती है कि अपने रचयिता को जवानी में याद रखो। कृपया यह न सोचें कि आप मेरी तरह अपना सारा जीवन बर्बाद कर सकते हैं और अंतिम क्षण में पश्चाताप कर सकते हैं। देखो, अभी वह समय है, जब वह प्रसन्न है; देखो, अभी उद्धार का दिन है।

यदि आप इतने बड़े उद्धार के प्रति लापरवाह होने जा रहे हैं, तो आपके पास परमेश्वर के दंड और न्याय से बचने का कोई रास्ता नहीं है। यीशु के लिए जीवन जीना एक महान और गौरवशाली कार्य है। यीशु के साथ मेरी यात्रा, जो जीवित रहते हुए आशीष का आश्वासन देती है और जीवन के बाद अनंत जीवन, जीवन के अंतिम क्षणों में मेरे लिए शुरू हुई। लेकिन मेरे प्यारे नौजवानों! मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूं कि यह अभी शुरू हो और हमेशा-हमेशा के लिए बना रहे। धन्यवाद!

**रिपोर्टर:** धन्यवाद भाई

# उत्तर भारत इग्नाइटर्स की रिपोर्ट

परमेश्वर की कृपा से हमने 2021 में उत्तर भारत, पूर्वी भारत के लिए इग्नाइटर्स कैंप आयोजित किया गया । लगभग 1966 इग्नाइटर्स ने भाग लिया। 2023 में महाराष्ट्र यूथ इग्नाइटर्स मीटिंग आयोजित की गई और लगभग 1339 युवाओं ने भाग लिया। इन तीनों कैंप में करीब करीब 3305 युवकों ने प्रभु के अभिषेक को प्राप्त किया और पुनरुत्थान और प्रभु का बोझ को प्राप्त किए । इस कैंप के बाद इग्नाइटर्स अपने घरों को लौटें और प्रभु की इच्छा के अनुसार व्यतीत पुरा कर रहे हैं। इग्नाइटर्स हर हफ़्ते प्रार्थना सभा आयोजित कर रहे हैं और राष्ट्र और पुनरुद्धार के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। इग्नाइटर्स सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं और आत्माओं को मसीह के पास ला रहे हैं।प्रभु मे स्थिर रहें ने के लिए विविध अनुवर्ती बैठकें और युवा सभा आयोजित की जा रही हैं। इन इग्नाइटर्स के माध्यम से परमेश्वर की अनुग्रह से हम 89,978 प्रार्थना घंटे और 26,049 आत्माओं तक पहुँच चुके हैं। प्रभु यीशु की सारी महिमा मिले।

COU
म्हारा
ALEM

# सपन्याह

प्रिय युवा पाठकों! हम हर महीने बाइबल से एक किताब के बारे में सीख रहे हैं। इस महीने हम संक्षेप में "सपन्याह" की पुस्तक के बारे में तथ्यों को देखने जा रहे हैं जो कि बाइबल की 9वीं छोटी भविष्यवाणी की पुस्तक है।

## परिचय

सपन्याह की पुस्तक उन छोटे भविष्यवक्ताओं की सूची में अंतिम पुस्तक है जिन्होंने बंधुआई से पहले भविष्यवाणी की थी। सपन्याह ने यिर्मयाह के समय से ठीक पहले सेवा की थी। जब यहूदा और यरूशलेम के लोग बन्धुआई में होकर बेबीलोन देश में गए, तब यिर्मयाह ने यहोवा के वचन की भविष्यद्वाणी की।

सपन्याह ने भविष्यवाणी की कि कसदियों द्वारा यहूदिया और यरूशलेम का विनाश होगा। उसने उन्हें यहूदियों के पापों के बारे में बताया। उसने यहूदियों को अपने पापों का पश्चाताप करने की चेतावनी दी।

सपन्याह ने यहूदा की तरह पाप करने पर पड़ोसी राष्ट्रों को विनाश की चेतावनी भी दी। सपन्याह ने भी यहूदियों को इस वादे के साथ दिलासा दिया कि भले ही वे बेबीलोन की कैद में जा रहे थे, वे अपनी कैद से मुक्त हो जाएंगे और नियत समय में खुशी-खुशी अपने देश लौट आएंगे।

सपन्याह की पुस्तक फिलिस्तीन में 640 - 612 ईसा पूर्व के दौरान लिखी गई थी। भविष्यद्वक्ता सपन्याह इस पुस्तक का लेखक है (सपन्याह 1:1)।

लेखक: सपन्याह

समयकाल: 640-6120 ई.पू

अध्याय: 3

आयतें: 56

शब्द: 1,476

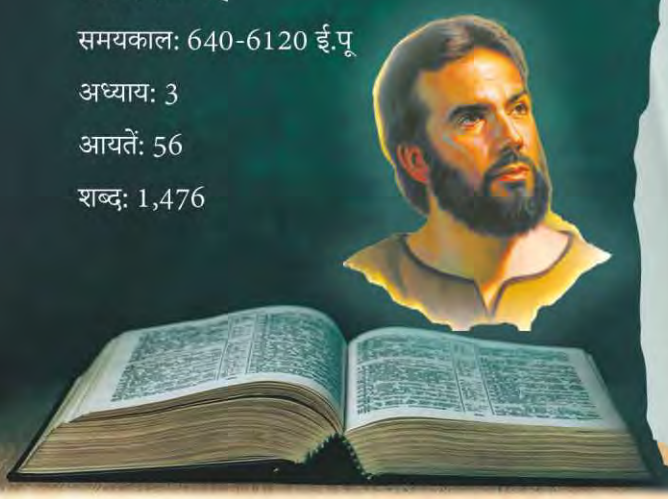

### प्रकाश डाला गया

. यह पुस्तक पुराने नियम की एकमात्र पुस्तक है जो प्रभु के दिन के बारे में स्पष्ट रूप से बताती है।

. प्रक्रिया दर्शाती है कि परमेश्वर के लोगों को अवश्य ही परमेश्वर की चेतावनियों को पूरा करना चाहिए और उसके वादों से सांत्वना प्राप्त करनी चाहिए।

. परमेश्वर के लोगों के लिए उद्धार के दिन के बारे में सपन्याह के प्रकटीकरण, दुष्टों के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध के कारण, नए नियम के बाद के दिनों के प्रकटीकरणों का पूर्वाभास देते हैं।

## नए नियम में पूर्ति

उसके दूसरे आगमन के विषय में (सपन्याह 1:2, 15; मत्ती 13:40-42; 24:29) यीशु ने सपन्याह की पुस्तक से दो बार उद्धरण दिया।

नए नियम के लेखकों का मानना है कि सपन्याह का 'प्रभु का महान दिन' महान क्लेशों की अवधि से लेकर जीवित और मृत लोगों का न्याय करने के लिए यीशु के दूसरे आगमन तक की घटनाओं का वर्णन करता है। नया नियम कई बार यीशु के दूसरे आगमन और न्याय के दिन को 'उस दिन' के रूप में संदर्भित करता है।